E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

अनुबन्ध चतुष्टय (भूमिका)

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

प्रत्येक शास्त्र तथा ग्रन्थ के आरम्भ में अनुबन्धों का प्रदर्शन होता है। 'अनु स्वज्ञानाद् अनन्तरं बघ्नन्ति शास्त्रे ग्रन्थे वा आसज्जयन्ति प्रवर्तयन्ति ये ते अनुबन्धाः' व्युत्पत्ति के अनुसार जिनका ज्ञान होने पर किसी शास्त्र या ग्रन्थ के अध्ययन में ज्ञाता की प्रवृति है होती है, उन्हें अनुबन्ध कहा जाता है।

अनुबन्ध जिसके ज्ञान से शास्त्र अथवा ग्रन्थ के अध्ययन में अध्येता की प्रवृत्ति होती है, चार होते हैं- अधिकारी, विषय, सम्बन्ध और प्रयोजन-

तत्रानुबन्धो नामाधिकारिविषयसम्बन्धप्रयोजनानि"।

अधिकारी का अर्थ है- शास्त्र अथवा ग्रन्थ के अध्ययन के लिये अपेक्षित योग्यता से सम्पन्न व्यक्ति। विषय का अर्थ है- वह वस्तु जिसका शास्त्र अथवा ग्रन्थ में वर्णन है। सम्बन्ध का अर्थ है- शास्त्र अथवा ग्रन्थ के साथ विषय का सम्बन्ध और वह है प्रतिपादकत्व। शास्त्र में अथवा ग्रन्थ में वर्णित वस्तु रूप विषयशास्त्र अथवा ग्रन्थ का प्रतिपादक होता है और ग्रन्थ उसका प्रतिपाद्य होता है। विषय का प्रतिपादकत्व ही शास्त्र अपना के साथ विषय का सम्बन्ध है। प्रयोजन का अर्थ है कार्य जो शास्त्र अथवा ग्रन्थ के अध्ययन से प्राप्तव्य होता है। अधिकारी, विषय, सम्बन्ध और प्रयोजन चारों को मिलाकर अनुबन्चचतुष्टय कहा जाता है।

इन चारों का ज्ञान ही मनुष्य की किसी क्रिया के करने के लिये ही प्रयत्नशील करता है। अतएव ग्रन्थ के प्रारम्भ में इनका प्रतिपादन आवश्यक हो जाता है-

"ज्ञातार्थं ज्ञातसम्बन्धं श्रोतुं श्रोता प्रवर्तते।

ग्रन्थादौ तेन वक्तव्यः सम्बन्धः सप्रयोजनः"।।

नोट-इन सबका का विस्तृत विवेचन आगे के ब्लाग में होगा।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi